B.A. History Hon's Part: I
Paper: I, Unit: V, Date: 23.11.2020 Lecture No: 20

Lession: भारत पर हुये अरब आक्रमण के कारण

अरब आक्रमण के समय सिन्ध राजनीतिक परिवर्तनों और आंतरिक
कलह के कारण से बहुत कमजोर हो गया था। उस समय के लोगों में सामाजिक
एकता भी नहीं थी। इस कारण से दाहिर भी काफी बदनाम हो चुका था, क्योंकि
उसके पिता ने सिंहासन बलपूर्वक प्राप्त किया था। एक लम्बे अवधि से भारत
और अरब के बीच वाणिज्य सम्बन्ध थे। अरबों द्वारा इस्लाम धर्म स्वीकार
करने से पहले अरब व्यापार के पश्चिमी तट पर आते थे और वहाँ उन्हें
अच्छा सेवा-सत्कार भी मिलता था। भारतीयों में 7वीं सदी के पश्चात
भी कोई परिवर्तन नहीं आया। अरबों के प्रकृति में फर्क आ गया था जिसका
मुख्य कारण धर्म था।

अरबों की महत्वकांक्षा ने भी सिन्ध आक्रमण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनकी महत्वकांक्षा की वजह से उन्होंने सीरिया, मेसोपोटामिया, अफगानिस्तान, ईरान, बलूचिस्तान, अफ्रीका का सम्पूर्ण उत्तरी तट तथा ऊपरी और निचले मिस्र, स्पेन, पुर्तगाल और दक्षिण फ्रांस का हिस्सा अपने अधिकार में कर लिया। धार्मिक उत्साह की वजह से भी अरबों ने सिन्ध पर आक्रमण किया। एक महत्वपूर्ण कारण यह भी माना जाता है कि लंका के सम्राट ने जहाज द्वारा धन तथा औरतें ईराक भेजी थी, परन्तु सिन्धी समुद्री डाकुओं ने ही भारतीय समुद्र तट पर उस जहाज को लूट लिया। इसलिये अल-हज्जाज ने दाहिर से लूट का माल वापस माँगा। क्रुद्ध होकर हज्जाज ने दाहिर से बदला लेने की ठानी। उसने खलीफा से वालिद की अनुमति लेकर उबैदुल्ला के नेतृत्व में दाहिर के विरुद्ध सेना भेजी, परन्तु दाहिर ने उसे हरा दिया।

करीब 712 ई. में मुहम्मद बिन कासिम 20 हजार सैनिकों की विशाल सेना लेकर शिराज और मकरान के मार्गों से होता हुआ सिन्ध पहुँचा और उसने सर्वप्रथम देवल के बन्दरगाह पर अधिकार कर लिया। वहाँ के निवासियों को इस्लाम धर्म कबूल करने पर बाध्य किया तथा आज्ञा का पालन नहीं होने पर कत्लेआम करवा दिया। देवल पर अधिकार प्राप्त होने के बाद मुहम्मद-बिन-कासिम निरुन पहुँचा और उस पर भी बड़ी आसानी से कब्जा कर लिया। अन्त में आक्रमणकारियों ने ब्राह्मणवाद और अलोर पर कब्जा कर लिया और इस प्रकार सम्पूर्ण सिन्ध उसके अधिकार में आ गया। सिन्ध विजय के बाद मुहम्मद-बिन-कासिम ने मुलतान पर विजय प्राप्त की।

सिन्ध पर अरबों के विजय के कारण :-

a. एकता का अभाव: सर्वप्रथम तो सिन्ध आंतरिक रूप से छिन्न-भिन्न हो गया था। वहाँ की राजनीतिक एकता समाप्तप्राय थी। इसी कारण अरबों के शक्तिशाली आक्रमण का सामना करना उसके लिए कठिन हो गया।

b. राजा की अलोकप्रियता: अरबों की विजय का एक कारण यह था कि सिन्ध शासक अपनी प्रजा में लोकप्रिय नहीं था। प्रजा और शासक के बीच आपसी तालमेल नहीं था। दाहिर के गवर्नर करीब-करीब स्वतंत्र हो गये थे।

c. हिन्दुओं का विश्व मैत्री का सिद्धांत: हिन्दू लोग धार्मिक दृष्टि से अति सहिष्णु थे। उन्होंने दूसरे धर्म के लोगों के लिए मैत्री भाव अपनाया। उनके इस्लाम धर्म के मध्य में काफी अन्तर होने के बावजूद प्रान्त तब काफी गरीब था। दरिद्रता की वजह से यह सम्भव नहीं था कि विशाल सुसंगठित और सुसज्जित सेना रख सके।

d. सिन्ध का देश के अन्य भागों से अलग होना: सिन्ध प्रान्त कितने दिनों से शेष भारत से अलग था। आपत्ति के समय सिन्ध को देश के अन्य भागों से कोई सहायता नहीं मिल सकी। सीमान्त प्रदेशों की सुरक्षा की कोई व्यवस्था नहीं थी।

e. आक्रमणकारी सेना की उत्तमता। दाहिर की सेना की तुलना में अरब सेना उत्तम थी। आक्रमणकारी सेना नवीन युद्ध उपकरणों से सुसज्जित तथा उचित नेतृत्व के अधीन थी, जबकि भारतीय सेना का नेतृत्व कमजोर था और अस्त्र-शस्त्र भी प्राचीन थे।

f. धार्मिक आदर्श। अरबों में यह भावना विद्यमान थी कि अल्लाह ने उन्हें इस्लाम प्रसार के लिए प्रतिनिधि के रूप में भेजा है जबकि सिन्ध के लोगों में इस प्रकार का कोई धार्मिक आदर्श नहीं था।

(g) राजा की कमजोरी। अरब की विजय का सबसे महत्वपूर्ण कारण यह था कि सिन्ध का शासक दाहिर अयोग्य एवं दुर्बल था। उसने सेना का नेतृत्व करने के स्थान पर एक सिपाही की भाँति युद्ध में भाग लिया। अरबों के लिए हिन्दुओं को अपना धर्म मानने की स्वतंत्रता दे दी। अरबों द्वारा हिन्दुओं को दी गई छूट के बाद के मुसलमानों के लिए नियम बन गया।

अरब आक्रमण का प्रभाव:

अरबों की सिन्ध-विजय भारत तथा इस्लाम के इतिहास में एक कथा मात्र थी। यह एक परिणामहीन विजय थी। अरबों का किसी भी क्षेत्र में कोई प्रभाव नहीं पड़ा। उन्होंने न तो अरबों को भगाने का कोई प्रयत्न किया और न ही सीमा सुरक्षा का प्रबन्ध। वे तुर्कों के आक्रमण के समय भी पूर्ववत ही आलसी, तटस्थ और अप्रस्तुत रहे। सांस्कृतिक क्षेत्र में भी अरब लोग ही भारतीयों से प्रभावित हुए। उन्होंने कई संस्कृत पुस्तकों और ब्रह्मसिद्धान्त तथा खण्डखाद्यक का अरबी में भी अनुवाद करवाया। चित्रकला, भवन-निर्माण कला, अंक विद्या, दर्शन आदि को भी अरबों ने भारतीयों से सीखा। भारत के चिकित्साशास्त्र ने भी अरबों को प्रभावित किया और और आगे नवीं सदी से यूरोप का प्रबोधन भी अरबों के भारत सम्पर्क से ही हुआ।

इस प्रकार हम स्पष्ट रूप से देखते हैं कि अरबों की सिन्ध-विजय चिरस्थायी नहीं रह सकी और न ही अरबों का किसी भी प्रकार से किसी क्षेत्र में किसी भी प्रकृति का कोई प्रभाव पड़ा। डा॰ ताराचन्द के आधार पर तो स्टेनली, लेनपूल तथा वूल्जले हेग आदि विद्वानों के साथ सहमत होते हुए यह कहना ही अरबों की विजय का भारत पर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा। एकदम प्रभावहीन है। अरबों की विजय भारत के तथा इस्लाम के इतिहास में एक कथा मात्र थी और वह एक परिणामहीन विजय ही थी।

डॉ॰ शंकर जय किशन चौधरी
अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग
डी॰ बी॰ कॉलेज, जयनगर